नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्थापित २००५ ई.

7897475917, 9794299451
Website: www.mpm.edu.in
E-mail : mpmpg5@gmail.com

पत्रांक : ..... दिनांक : 27.08.2019

प्रकाशनार्थ

जलियॉवाला बाग नरसंहार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का वह अहम पड़ाव है, जिससे गुजरकर स्वाधीनता संघर्ष ने एक नया मोड़ लिया और भारत को स्वतंत्र कराने के प्रयासों ने जोर पकड़ा। तत्कालीन भारत के सरदार भगत सिंह एवं अन्य अनेक क्रांतिकारी इसी घटना की उपज थे। अमृतसर स्थित जलियॉवाला बाग नरसंहार में मरने वाले हजारों की संख्या में निर्दोष भारतीयों का वह बलिदान ही आगे चलकर भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति में सहायक सिद्ध हुआ। आज आवश्यकता है कि हम जलियॉवाला बाग की घटना को मनोसंवैगिक परिप्रेक्ष्य में देखें। भारतीय युवा पीढ़ी को देश के बलिदानी वीरों की गाथाओं से राष्ट्रभक्ति की भावना की ओर उन्मुख करें और राष्ट्र निर्माण को प्रेरित करें। देश का युवा तब तक देश का निर्माण नहीं कर सकता है, जब तक कि उसको अपने गौरवशाली अतीत और समृद्ध परम्परा का भान न हो। भारत के इतिहास को भारतीय संदर्भो की दृष्टि में जानने की आवश्यकता है। आवश्यकता है राष्ट्रप्रेम एवं संस्कृति से युक्त ऐसे युवा गढ़ने की जो फिर से भारत को विश्व गुरू के पद पर अभिषिक्त कर सके। उक्त बातें भारतीय इतिहास संकलन समिति गोरक्षप्रांत और प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग तथा इतिहास विभाग, महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर के संयुक्त तत्वावधान में **''इतिहास दिवस''** के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में **'जलियॉवाला बाग नरसंहार : एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन'** विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के आचार्य **प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी** नें कही।

प्रो. हिमांशु चतुर्वेदी ने आगे कहा कि भारत का सनातन गौरव एवं संस्कृति पराधीनता के इतने लम्बे अवधि के बावजूद आज भी जीवित है। यातनाओं और प्रताणनाओं के अंतहीन श्रृॅखलाओं के बाद भी भारतीय संस्कृति आज भी हमारे जीवन एवं दैनिक व्यवहार व दिनचर्या में सशक्त रूप में जीवित है। काल के प्रवाह में विश्व की लगभग समस्त सभ्यताएं और संस्कृतियाँ विनष्ट हो गई, किन्तु भारतीय धर्म–संस्कृति एवं सभ्यता की सातत्यता आज भी देखी जा सकती है।

इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के **प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव** नें की तथा कार्यक्रम का संचालन प्राचीन इतिहास विभाग के प्रवक्ता **डॉ. सौरभ कुमार सिंह** ने किया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

(डॉ. राजेश शुक्ला)
सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी